

Official Periodical of Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी की अधिकृत पत्रिका

SHRI SAI LEELA

श्री साईं लीला

* Year 23 * Issue 4 * July - August 2023 * ₹ 15/-

* वर्ष २३ * अंक ४ * जुलाई-अगस्त २०२३ * ₹ १५/-



Sai said, "This is the place of my Guru.
This holy place is my inheritance.
I request you to maintain it as it is".





The President of India, Smt. Draupadi Murmu availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* and performed the worship of the Holy Feet of Shri Sai Baba... Shri Ramesh Bais, Governor of Maharashtra, Shri Radhakrishna Vikhe Patil, Guardian Minister, Shri Sadashiv Lokhande, Member of Parliament, Shri Sudhakar Yarlagaadda, Chairman of the Sansthan's ad-hoc committee and Principal District and Sessions Judge, Shri Siddharam Salimath, Member of the Sansthan's ad-hoc committee and District Collector and Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer of the Sansthan, were present on the occasion.

“The sins accumulated from many past lives were destroyed by the benevolent glance. Hope awakened of unending joy being received at Sai's Feet.”... “My (Govind Raghunath Dabholkar alias Hemadpant) meeting with Sai Maharaj is the outcome of the good deeds of all my previous births. If the eyes are filled with the form of Sai, then the whole world takes the form of Sai.”... “By my (one of the gentlemen from Goa when came to Shirdi for Sai's *darshan*) immense good fortune I have attained to Shirdi. I feel that for Shri Sai's '*darshan yatra*' I would sacrifice everything. Sai, the Pure and Benevolent, is the great *Vaishnav*. He is truly the sprout of the Tree of Knowledge which shines like the Sun in the Sea of Consciousness... In this way, Sai showed His all-pervasive nature and how He resided in the hearts of all, bearing witness to all that happens everywhere. Seeing Sai's smiling visage I felt extremely happy, and though being worldly forgot all about the pains of the worldly existence. My blissful joy cannot be contained. Let everything happen as per destiny; and my mind certainly attain to that state. May my love be eternal at Sai's Feet and may He dwell always in my heart and eyes. Sai *Leelas* are inconceivable and infathomable! There is no limit to His obligations. O Compassionate One, I feel like wearing out my body and mind in Your service.”

- SHRI SAI SATCHARITA

SHRI SAIBABA SANSTHAN TRUST, SHIRDI
Hon'ble Members of Ad-hoc Committee



Shri Sudhakar Yarlagadda
(Chairman)
Principal District & Sessions Judge,
Ahmednagar



Shri Siddharam Salimath (IAS)
(Member)
District Collector, Ahmednagar



Shri P. Siva Sankar (IAS)
(Chief Executive Officer)

Internet Edition - URL: <http://www.shrisaibabasansthan.org>

श्री साईं लीला

वर्ष २३ अंक ४

सम्पादक : मुख्य कार्यकारी अधिकारी
कार्यकारी सम्पादक : भगवान दातार

SHRI SAI LEELA

Year 23 Issue 4

Editor : Chief Executive Officer
Executive Editor : Bhagwan Datar

अंतरंग

❖ गुरुभक्त सद्गुरु साईं... : डॉ. ओम प्रकाश टाक	५
❖ साईं वचनामृत : विनय घासवाला	९
❖ Shirdi News	11
❖ Shri Gurupournima Festival - 2023	22

● Cover & inside pages designed by Don Bosco and Prakash Samant (Mumbai) ● **Computerised Typesetting**: Computer Section, Mumbai Office, Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi ● **Office** : 'Sai Niketan', 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar (East), Mumbai - 400 014. Tel. : (022) 24150798 E-mail : saidadar@sai.org.in ● **Shirdi Office** : At Post Shirdi - 423 109, Tal. Rahata, Dist. Ahmednagar. Tel. : (02423) 258500 Fax : (02423) 258770 E-mail : 1. saibaba@shrisaibabasansthan.org 2. saibaba@sai.org.in ● **Annual Subscription: Rs. 125/-** ● **Subscription for Life : Rs. 2,500/-** ● **Annual Subscription for Foreign Subscribers : Rs. 1,000/-** (All the Subscriptions are Inclusive of Postage) ● **General Issue: Rs. 15/-** ● **Shri Sai Punyatithi Annual Special Issue : Rs. 25/-** ● Published and printed by the Chief Executive Officer, on behalf of Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi at Sai Niketan, 804-B, Dr. Ambedkar Road, Dadar, Mumbai - 400 014 and at the Printrade Issues (I) Pvt. Ltd., 17, Pragati Ind. Estate, 316, N.M. Joshi Marg, Mumbai - 400 011 respectively. The Editor does not accept responsibility for the views expressed in the articles published. All objections, disputes, differences, claims and proceedings are subject to Mumbai jurisdiction.



**Shri P. Siva Sankar
(IAS)**



2011 Batch IRS

**Village Janardhanapalli, Vidapanakal,
Anantapur - 515 812**

**School - ZPHS, Kottalapalli,
Vidapanakal, Anantapur (6th to 10th)**

**(11th to 12th) Goverment Junior College,
Uravakonda, Anantapur**

(B.Sc. Course) (Graduation)

Arts College, Anantapur

**(Post Graduate) Osmania University,
Hyderabad (M.A., AIHCA)**

**M.A. in Ancient Indian History Culture
and Archaeology (AIHCA)**

**Asst. Collector, PO ITDA, Gadchiroli,
Maharashtra**

**Municipal Commissioner, Kolhapur,
Maharashtra**

**District Collector, Parbhani,
Maharashtra**

C.M.D., MSWC, Pune, Maharashtra

**Municipal Commissioner, Solapur,
Maharashtra**

**Textile Commisioner, Nagpur,
Maharashtra**

2008 Batch IRS

Asst. Social Welfare Officer (A.P.)

Asst. Statistical Officer (A.P.)

श्री साई बाबा हमेशा कहा करते थे कि “मेरा भक्त चाहे एक हजार कोस की दूरी पर ही क्यों न हो, वह शिर्डी की ओर ऐसा खिंचा चला आता है, जैसे धागे से बँधी हुई चिड़िया खिंच कर स्वयं ही आ जाती है।”

“एक चिड़िया अपने बच्चों का जितनी सावधानी से लालन-पालन करती है, उसी प्रकार उन्होंने मेरा भी पालन किया। उन्होंने मुझे अपनी शाला में स्थान दिया। कितनी सुंदर थी वह शाला! वहाँ मुझे अपने माता-पिता की भी विस्मृति हो गई। मेरे समस्त अन्य आकर्षण दूर हो गए और मैंने सरलता पूर्वक बंधनों से मुक्ति पाई। मुझे सदा ऐसा ही लगता था कि उनके हृदय से ही चिपके रह कर उनकी ओर निहारा करूँ! यदि उनकी भव्य मूर्ति मेरी दृष्टि में न समाती, तो मैं अपने को नेत्रहीन होना ही अधिक श्रेयस्कर समझता! ऐसी प्रिय थी वह शाला कि वहाँ पहुँच कर कोई भी कभी खाली हाथ नहीं लौटा। मेरी समस्त निधि, घर, सम्पत्ति, माता, पिता

या कहूँ, वे ही मेरे सर्वस्व थे। मेरी इंद्रियाँ अपने कर्मों को छोड़ कर मेरे नेत्रों में केंद्रित हो गई, और मेरे नेत्र उन पर। मेरे लिए तो गुरु ऐसे हो चुके थे कि दिन-रात मैं उनके ही ध्यान में निमग्न रहता था। मुझे किसी भी बात की सुध न थी। इस प्रकार ध्यान और चिंतन करते हुए मेरा मन और बुद्धि स्थिर हो गई। मैं स्तब्ध हो गया और उन्हें मानसिक प्रणाम करने लगा।...

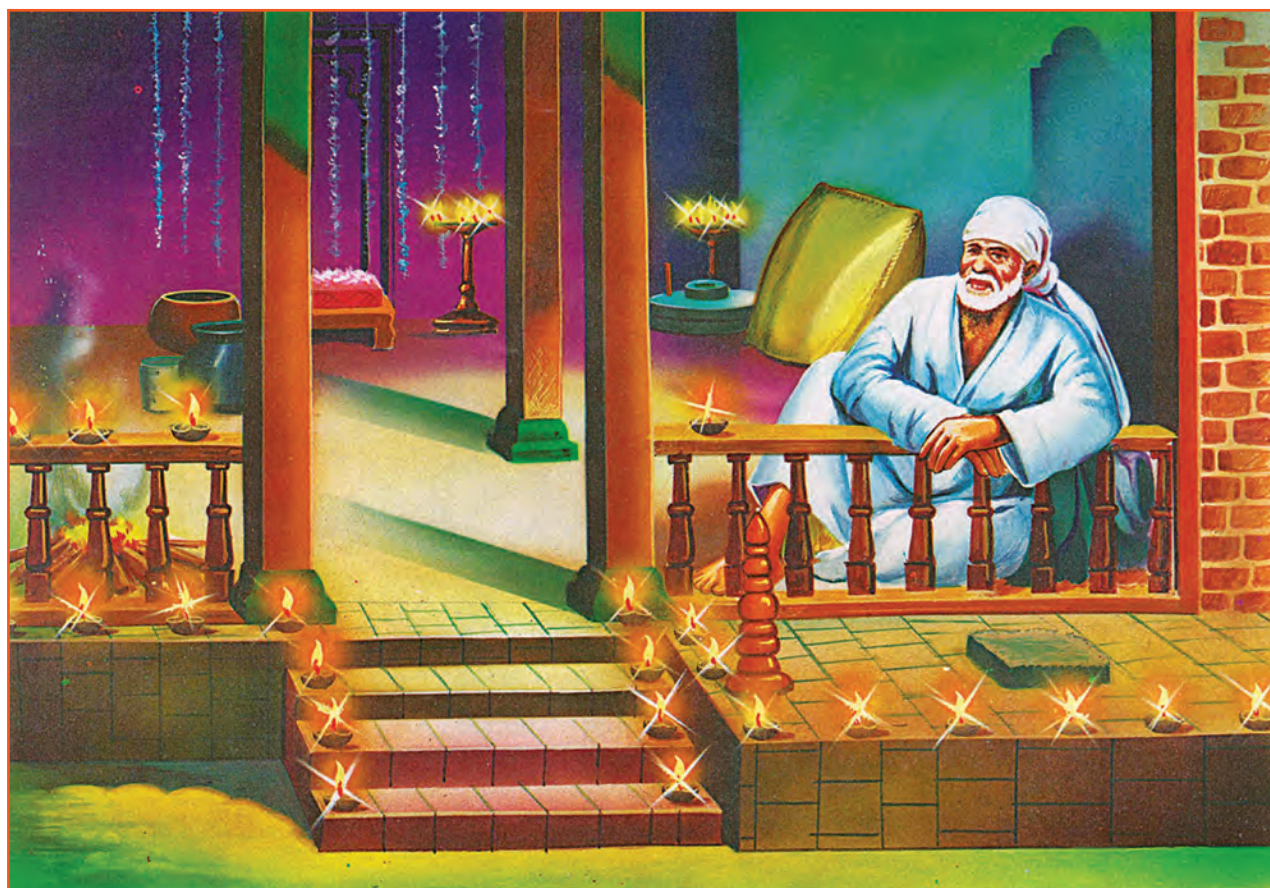
गुरुभक्त सद्गुरु साईं...

एक दिन बाबा मस्जिद में भक्तों एवं दर्शनार्थियों से घिरे बैठे थे। गोविंदराव दाभोलकर और काकासाहेब दीक्षित भी वहीं थे। चर्चा के दौरान किसी ने बाबा से पूछा, “बाबा, कहाँ जाएँ?” उत्तर मिला, “ऊपर जाओ!” फिर दूसरा प्रश्न किया गया, “मार्ग कैसा है?” बाबा ने प्रत्युत्तर दिया, “अनेक पंथ हैं। यहाँ से भी एक मार्ग है; परन्तु यह मार्ग दुर्गम है। इस मार्ग में सिंह और भेड़िये भी मिलते हैं।” बाबा की बात सुन कर काकासाहेब दीक्षित अपने को रोक नहीं पाए। उन्होंने तत्काल अपनी जिज्ञासा प्रकट की, “यदि पथप्रदर्शक भी साथ हो तो?” बाबा ने संयत भाव से उत्तर दिया, “तब कोई कष्ट नहीं होगा। पथप्रदर्शक सिंह, भेड़िये और खंदकों से रक्षा कर तुम्हें

सीधे निर्दिष्ट मार्ग पर पहुँचा देगा; परन्तु उसके अभाव में जंगल में मार्ग भूलने या गड़ढ़े में घिर जाने का भय है।”

दाभोलकर इस प्रश्नोत्तर से चकित रह गये। पिछले कई दिनों से उनके मन में ‘गुरु की आवश्यकता क्या है?’ यह प्रश्न घुमड़ रहा था; लेकिन यह चर्चा सुन कर उन्हें अनायास ही अपने प्रश्न का उत्तर मिल गया। उन्होंने जान लिया कि गुरु के मार्गदर्शन में ही परमार्थ पथ पर अग्रसर हुआ जा सकता है, और गुरु की कृपा से ही ईश्वर का अनुग्रह प्राप्त किया जा सकता है।

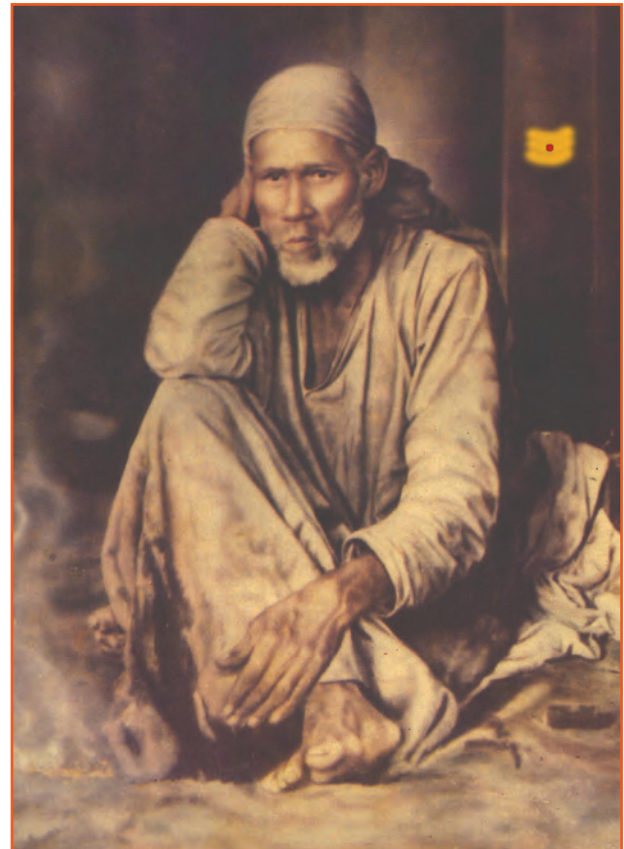
बाबा की गुरुनिष्ठा प्रबल थी। वे असाधारण गुरुभक्त थे। वे हर क्षण अपने गुरु के प्रति गहन कृतज्ञता एवं श्रद्धा



से अभिभूत रहते थे। ऐसा लगता था, जैसे गुरुसत्ता उनकी अस्थिमज्जा में प्रतिष्ठित और रक्त में प्रवाहित है। बाबा ने बाल्यावस्था में ही सद्गुरु की कृपादृष्टि प्राप्त कर ली थी। गुरुदेव ने उनमें अपनी शक्ति का संचार कर भविष्य का आधार सौंप दिया था। गुरु प्रदत्त शक्ति ही बाबा की मूल पूँजी थी। गुरु के सान्निध्य में बिताए दिन बाबा की चेतना से कभी विस्मृत नहीं हो पाए। विशेष रूप से गुरुशाला के दिन तो उनकी सबसे मूल्यवान् स्मृति-संपदा थी। एक दिन मस्जिद में अपने आत्मीय भक्तों के साथ बातचीत के दौरान अपने गुरु के वत्सल-पुष्कल चरित्र और अपने आत्मपरिष्कार के बारे में श्रद्धा-विनत होकर सब कुछ बताते हुए बाबा अतीत में खो गए। गुरुशाला के स्वर्णिम दिन उनकी आँखों के आगे जीवंत हो उठे। बाबा के श्रीमुख से गुरुचरित का वर्णन सुन कर उपस्थित भक्तों का चित्त प्रसन्न हो गया, और वे एक दुर्लभ उपलब्धि हासिल कर लेने के आह्लाद से भर गए। ऐसे ही एक दिन बाबा ने बतरस के दौरान विस्मित-विभोर स्वर में प्रो. नारके से पूछा, “तुम कहाँ हो? मैं कहाँ हूँ? यह संसार कहाँ है?” फिर क्षणिक अंतराल के बाद अपने शरीर की ओर इशारा करते हुए वे बोले, “यह मेरा घर है; लेकिन मैं यहाँ नहीं हूँ। मेरे मुरशिद (गुरु) मुझे ले गए।” नारके ने पूछा, “गुरु कहाँ ले गए?” जवाब मिला, “सबसे परे और सबसे ऊपर की ओर ले गए।” नारके समझ गए कि गुरुदेव बाबा को एक उच्चतम लोक की यात्रा पर ले गए, और वहाँ ले जाकर गुरुदेव ने देहभाव और देहबुद्धि हर ली तथा उन्हें विशुद्ध आत्मरूप प्रदान कर दिया। यह कोई सामान्य सौदा नहीं था। यह सर्वोन्नति थी। आत्मलाभ था। यह गुरु का वरदान और पुरस्कार था, जिसने शिष्य के रूप में बाबा को संकुचित देहगृह से निकाल कर विराट आत्मगृह का स्वामी बना दिया। यह एक अनमोल उपलब्धि थी, जो बाबा ने गुरुकृपा से अर्जित की थी। यह गुरुप्रसाद था, जिसने बाबा को दिव्य चेतना से विभूषित कर दिया। नारके बाबा का आत्मसंवाद सुन कर और उसका सटीक अर्थ ग्रहण कर प्रसन्न हो गए। एक गुरु-गवाक्ष उनके सामने खुल गया।

वास्तव में बाबा अपने गुरु की ही निर्मिति थे। उन्होंने गुरुकृपा से ही परम पूर्णता और परम सिद्धि को पाया था, और गुरु के आदेश से ही उन्होंने जगत् उद्धार का व्रत लिया था। गुरु ही उनके श्रद्धादेव थे और गुरु

ही उनके शक्तिस्त्रोत थे। बाबा ने कई बार गुरु की महिमा का बखान किया; लेकिन कभी अपने गुरु की स्पष्ट पहचान उजागर नहीं की। अनेक अवसरों पर उन्होंने गुरु की आवश्यकता को बताया; लेकिन गुरु को नाम-संज्ञा देने से संकोच किया। बाबा प्रायः गुरु की आवश्यकता एवं गुरुमहिमा को अचरज भरे कथा-सूत्रों एवं अनुभव-आख्यानों के माध्यम से अभिव्यक्त करते थे। एक दिन मस्जिद में अपने भक्तों के बीच बैठे बाबा ने गुरुभक्ति के संबंध में एक कहानी सुनाई... “एक बार हम चार विद्यार्थी मित्र धर्मग्रन्थों का अध्ययन करने के बाद ब्रह्म के मूल स्वरूप को जानने की जिज्ञासा से बैचैन हो गए, और चिंतन-मनन करते हुए वन की ओर निकल गए। हमें अपने भूख-प्यास की कोई सुध नहीं थी। हमारे सामने ज्वलंत प्रश्न यह था कि ‘ब्रह्मरूप सत्य’ की खोज कैसे की जा सकती है, और उसे कैसे पाया जा सकता है। इस पर विचार करते हुए एक साथी ने कहा कि हमें अपनी ही जागृति करनी चाहिए, पर-निर्भरता उचित नहीं है। दूसरे ने कहा कि अपनी इच्छाओं पर पूर्ण नियंत्रण रख कर मनोनिग्रह द्वारा ही सत्य को पाया जा सकता है।



तीसरे का मत था कि नित्य-अनित्य विवेक ही हमें सत्य तक पहुँचा सकता है। चौथे सदस्य के रूप में मैंने (अर्थात् स्वयं बाबा ने) कहा कि स्वयं को गुरु-चरणों में समर्पित कर देना चाहिए। गुरु पर भरोसा करके, उनका मार्गदर्शन प्राप्त करके ही हम अपने लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं।”

बाबा जो कहानी सुना रहे थे, वह असाधारण थी। गुरु की आवश्यकता और गुरु-महिमा को बताने वाली उस कहानी में बाबा ने एक किरदार के रूप में प्रवेश कर अपने निजी अनुभव भी उसमें समाविष्ट कर दिये, जिन्हें वे एकाग्र और तन्मय होकर सुना रहे थे। अपनी अनुभव कथा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कहा, “इस बहस में उलझे हम चारों मित्र बीहड़ वन में अनवरत चलते रहे। वन बहुत विस्तृत और पथहीन था। चारों ओर

ऊँचें, घने वृक्ष थे। सूर्य की किरणें उन विशालकाय आदिम वृक्षों से छन कर बहुत मुश्किल से ज़मीन को छू पा रही थीं। उस वन क्षेत्र में अचानक हमें एक बंजारा दिखा। हमें देख कर वह समीप आया और बतियाने लगा। बंजारा था तो एक अनपढ़, गँवार; लेकिन उसका हृदय करुणा और विनय से भरा था। हमारे क्लान्त-श्लथ चेहरों की पीड़ा उससे छिपी नहीं रह सकी। उसने बहुत आत्मीयता से हमें भोजन और विश्राम के लिए आमंत्रित किया और किसी पथ-प्रदर्शक की सहायता से जंगल पार करने का सुझाव दिया। हमारा मानना था कि अपना लक्ष्य अर्जित करने के लिए स्व-सामर्थ्य चाहिए, पर-निर्भरता नहीं; इसलिए हम बंजारे के आग्रह को अनसुना कर आगे बढ़ गए। इस तरह चलते-चलते हम मार्ग भूल गए, और बहुत देर तक यहाँ-वहाँ भटकते रहे। अंततः हम लोग पुनः उसी स्थान पर आ पहुँचे जहाँ से हमने प्रस्थान किया था, तब संयोग से वही बंजारा हमें फिर मिला और आत्मीयता पूर्वक बोला, ‘प्रत्येक कार्य, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, मार्गदर्शक



आवश्यक है। भूखे रह कर कोई कार्य पूर्ण नहीं हो सकता; इसलिए यदि कोई आग्रह पूर्वक भोजन के लिए निमंत्रित करे, तो उसे अस्वीकार नहीं करना चाहिए। भोजन तो भगवान् का प्रसाद है, उसे ठुकराना उचित नहीं।' बंजारे की वाणी में एक सहज माधुर्य और गूढ़ संदेश था। उसने हमें पुनः भोजन के लिए आमंत्रित किया। मेरे अलावा अन्य सदस्य अहंकार से भरे थे। किसी की सहायता लिए बिना स्वतंत्र बुद्धि से और स्व-प्रयास से अपना लक्ष्य अर्जित करने पर अड़े हुए थे। उन्होंने बंजारे के आग्रह को फिर ठुकरा दिया और आगे बढ़ गये।"

बाबा ने आगे बताते हुए कहा, "मैं बंजारे के आग्रह को अनदेखा ना कर सका। उसके आमंत्रण में अपूर्व आत्मीयता थी। मैंने उसके परोसे भोजन को प्रेम पूर्वक ग्रहण किया। क्षुधा निवारण होते ही देखता हूँ तो क्या, गुरुदेव अचानक ही वहाँ प्रकट हो गए हैं! उन्होंने मुझसे जंगल में भटकने का कारण पूछा। मैंने उन्हें सारा वृत्तांत कह सुनाया। गुरुदेव ने मुझे आश्वस्त करते हुए कहा, 'मैं तुम्हारे हृदय की समस्त इच्छाएँ पूर्ण करूँगा; लेकिन जिसका विश्वास मुझ पर होगा, सफलता केवल

उसी को ही मिलेगी।' इस आश्वासन से अभिभूत होकर मैंने गुरुदेव को प्रणाम किया और उनका अनुगत बनने का संकल्प किया।"

इस कथा को सुनाते हुए बाबा का मन और मुख दोनों बोल रहे थे। लेकिन, अचानक वे चुप्पी लगा गए। निःसंदेह कहानी बड़ी रोचक थी; लेकिन उसके अर्थ निरूपण के लिए परिष्कृत विवेक की ज़रूरत थी।

बाबा के मुख से यह कथा सुन कर मस्जिद में बैठे किसी भक्त ने जिज्ञासावश प्रश्न पूछा, "बाबा ने जो अनुभव कथा सुनाई उसका निहितार्थ क्या है?" एक प्रज्ञाशील भक्त ने कुछ देर तक गहराई में सोचने के बाद प्रत्युत्तर दिया, "वे चार विद्यार्थी मित्र वस्तुतः आत्माएँ हैं और वह बीहड़ जंगल मायावी संसार है, जिसकी भूल-भुलैया में आत्माएँ खो गई हैं और मुक्ति का मार्ग ढूँढ़ रही हैं। वह जंगलवासी बंजारा ही संसाररूपी महावन में हमारा मार्गदर्शक और हमारा गुरु है, जो बाहर निकलने का मार्ग सुझाता है। हमें बिना किसी हिच-किचाहट के अपने आपको उसे सौंप देना चाहिए। मनुष्य को बुद्धि और इंद्रियों के जंगल से निकालने की सामर्थ्य केवल गुरु में ही है।" इस कथा का एकदम सटीक अर्थ ग्रहण कर भक्तजन इतने प्रफुल्लित हुए, मानो उन्हें किसी गूढ़ पहेली का हल मिल गया हो!

(क्रमशः अगले अंक में)

- डॉ. ओम प्रकाश टाक

रामद्वारा गली, बागर चौक,
जोधपुर - ३४२ ००१, राजस्थान.
संचार ध्वनि : (०)९८२९०२७०१०



श्री साई बाबा का कथन था कि मैं सदा भक्त के परार्थी रहता हूँ। जब वे शरीर में थे, उस समय भक्तों ने जो अनुभव किये, उनके सम्पादित होने के पश्चात् आज भी जो उनके शरणागत हो चुके हैं, उन्हें उसी प्रकार अनुभव होते हैं। भक्तों को तो केवल इतना ही यथेष्ट है कि यदि वे अपने हृदय को भक्ति और विश्वास का दीपक बना कर उसमें प्रेम की ज्योति प्रज्वलित करें, तो ज्ञानज्योति (आत्मसाक्षात्कार) स्वयं प्रकाशित हो उठेगी। प्रेम के अभाव में शुष्क ज्ञान व्यर्थ है। ऐसा ज्ञान किसी को भी लाभप्रद नहीं हो सकता। प्रेम के अभाव में संतोष नहीं होता। इसलिए हमारा प्रेम असीम और अटूट होना चाहिए।

- श्री साई सच्चरित



साई वचनामृत



(४६) जब तक अहंकार गुरुचरणों में अर्पित ना किया जाए तब तक सत्यस्वरूप की प्राप्ति असम्भव है। (अ. २४, श्री साई सत् चरित)

इन्सान की सबसे बड़ी कमजोरी उसका अहंकार है। यही संसार में सारे फ़साद की जड़ है। रूप का अहंकार,

दौलत का अहंकार, भक्ति का अहंकार, देह का अहंकार, आलिशान मकान का अहंकार, गाड़ी का अहंकार, न जाने कितने रूप बदल कर अहंकार रूपी रावण इन्सान की ज़िंदगी को तबाह करता रहा है। लेशमात्र भी अगर अहंकार मन में रह जाए, तो समझ लेना चाहिए कि मटका अभी कच्चा है। संयम, धैर्य ऐसे शस्त्र हैं जिनके द्वारा अहंकार का छेदन किया जा सकता है। पूर्व शुभकर्मों के फलस्वरूप यह अनमोल जीवन मिला है। उसकी सार्थकता तब है जब हम अपना अहंकार साई चरणों में रख दें। तब सम्भव है कि तुम साई-शरण पा सकोगे।

(४७) जब भक्त पूर्ण अन्तःकरण से श्री साई बाबा की भक्ति करने लगता है तब बाबा उसके समस्त कष्टों और दुर्भाग्यों को दूर कर स्वयं उसकी रक्षा करने लगते हैं। (अ. २५, श्री साई सत् चरित)

बाबा ने कई बार कहा है कि इससे पहले मेरे और तुम्हारे कई जन्म हो चुके हैं। तुम्हें उसका ज्ञान नहीं है; किन्तु मुझे सबकुछ याद है। हमारे कर्मों के कारण ही हमें कष्ट एवं दुष्परिणाम, या शुभ परिणाम का अनुभव होता है। सागर जैसा विशाल हृदय साई का है। उनकी शरण में आने वाले किसी को भी वे अपनी शरण में ले लेते थे। हजारों - लाखों भक्त शिर्डी जाकर यही अनुभव करते हैं। आने वाली आपत्ति को बाबा जान लेते थे। संकट की घड़ी में भक्तों के संकट हरने वाले दानवीर कर्ण की तरह साई सभी भक्तों के लिए आस्था का उद्गम स्थान थे।

(४८) बाबा ने कहा है कि “मुझ पर पूर्ण विश्वास रखो। यद्यपि मैं देहत्याग भी कर दूँगा, फिर भी मेरी अस्थियाँ आशा और विश्वास का संचार करती रहेंगी। केवल मैं ही नहीं, मेरी समाधि भी वार्तालाप करेगी, चलेगी, फिरेगी और उन्हें आशा का संदेश पहुँचाती रहेगी। निराश न होना कि मैं तुमसे विदा हो जाऊँगा। तुम सदैव मेरी अस्थियों को भक्तों के कल्याणार्थ ही चिंतित पाओगे। यदि मेरा निरंतर स्मरण और मुझ पर दृढ़ विश्वास रखोगे, तो तुम्हें अधिक लाभ होगा।” (अ. २५, श्री साई सत् चरित)

बाबा के अलावा हमारे लिए चिंता करने वाला

जगत् में कोई नहीं है। वे ही हमारे पालनहार हैं। बाबा सदा कहा करते थे, “तुम मेरी ओर देखोगे, तो मैं भी तुम्हारी ओर देखूँगा।”

बाबा का यह उपदेश या उनकी अमृतवाणी को सुख-दुख के समय हमें याद रखना ज़रूरी है।

संतचुडामणी दयानिधि साईनाथ को बार-बार प्रणाम!

(४९) साई उवाच - “जब और जहाँ भी तुम मेरा स्मरण करोगे, मैं तुम्हारे साथ ही रहूँगा।” (अ. २५, श्री साई सत् चरित)

“जनम-जनम से भटक रहा हूँ,
राह दिखा दे साई
खंडहर भी तेरी चरण-धूल से
बनते हैं द्वारकामाई”

साई ईश्वर हैं। इसमें तनिक भी संदेह नहीं है। वे तो अपना अवतार कार्य जी-जान से निभाते रहें, और अब भी निभा रहे हैं। बस, ज़रूरत है तो साई प्रति अटूट श्रद्धा की। रूह की गहराई से अगर तुम साई को आवाज़ दोगे, वे अपना आसन छोड़ कर तुम्हारी मदद के लिए दौड़े आयेंगे। उनके लिए कभी भी कोई भी रूप धारण करना आसान था। ‘साई’ का जाप हर पाप, हर गुनाह को भस्म करने की शक्ति रखता है। ‘साई’ में ही दुनिया समाई है।

(५०) साई उवाच - “तुम्हें अपने शुभ-अशुभ कर्मों का फल अवश्य ही भोगना चाहिए। यदि भोग अपूर्ण रह गया, तो पुनर्जन्म धारण करना पड़ेगा; इसलिए मृत्यु से यह श्रेयस्कर है कि कुछ साल, काल तक उन्हें सहन कर पूर्व जन्मों का भोग समाप्त कर सदैव के लिए मुक्त हो जाओ!” (अ. २६, श्री साई सत् चरित)

ऐसे कर्म मत करो जिनके कारण साई के आगे तुम्हारा मस्तक शर्म से झुक जाए। हमारे कर्मों का फल देने वाले साई ही हैं। साई की अदालत में गवाहों और सबूतों की ज़रूरत नहीं पड़ती। अदालतों की अदालत साई की अदालत है। अशुभ कर्मों के कारण चीख-पुकार का कोई लाभ नहीं। सबसे बड़ी अदालत के सरकार हमारे साई ही हैं। उनके हर फैसले को सर आँखों पर रखो। याद रहे कि

आत्महत्या अशुभ कर्मों का समाधान नहीं है।

(५१) माया से मुक्त होने का एकमात्र सहज उपाय अनन्य भाव से केवल श्री साई बाबा की शरण जाना ही है। वेद-वेदांत भी मायारूपी सागर से पार नहीं उतार सकते। (अ. २७, श्री साई सत् चरित)

जिन सांसारिक रिश्तों में हम बंधे हैं वे ही माया का जाल है। हमारा हमारे सग-संबंधियों के लिए इतना लगाव होता है कि उससे ऊपर उठ कर हम कुछ भी सोच ही नहीं सकते। माया नाम की अभिनेत्री हमें अपनी इच्छानुसार नचाती रहती है। जन्म से लेकर चिता तक माया हमारा साथ नहीं छोड़ती। इस माया के जाल को तोड़ने में केवल साई ही समर्थ हैं। अनन्य भाव से साई चरणों में अपने आप को सौंप दो। साई भक्त-वत्सल हैं। वे हमारे अवगुणों को भुला कर भवसागर से पार उतार देंगे। यह कभी मत भूलो कि अंतकाल जब आएगा तब तुम्हारा सबकुछ यहीं पर धरा रह जाएगा।

(५२) “विष्णुसहस्रनाम का जाप चित्तशुद्धि के लिए एक श्रेष्ठ तथा सरल मार्ग है।” (अ. २७, श्री साई सत् चरित)

बाबा ने उनके अंतरंग भक्त शामा को विष्णुसहस्रनाम के जाप के बारे में बताया कि “एक बार मैं बहुत बीमार पड़ गया। मेरे प्राणप्रखेरू उड़ना ही चाहते थे कि उसी समय मैंने इस सद्ग्रन्थ को अपने हृदय पर रख लिया। उस समय मुझे ऐसा ही भान हुआ, मानो अल्लाह ने स्वयं धरा तल पर आकर मेरी रक्षा की।”

हे साई के भक्तों, तुम भी नित्य सुबह या शाम जब भी समय मिले पूजाघर में एक दिया और अगरबत्ती जला कर विष्णुसहस्रनाम का जाप करो! मेरा अनुभव है। पिछले कई सालों से मैं यह जाप कर रहा हूँ। यह सद्ग्रन्थ आपको शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक सभी प्रकार के संकटों में सहायरूप सिद्ध होगा। बिगड़े काम सँवर जायेंगे और यश, सुख, समृद्धि आपको मिलेगी।

- विनय घासवाला

१०/३०२, लाभ रेसिडन्सी, अटलदरा,
बड़ोदरा - ३९० ०१२, गुजरात.
संचार ध्वनि : (०)९९९८९९०५६४





Shirdi News

* Public Relations Office *

Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi

- Translated from Marathi into English by

Vishwarath Nayar

E-mail : vishwarathnayar@gmail.com



Shri Rahul Jadhav, Deputy Chief Executive Officer of Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi felicitated Shri P. Siva Sankar (I.A.S.), the newly appointed Chief Executive Officer of the Sansthan with an idol of Shri Sai Baba and a shawl on Thursday, May 4, 2023...

Rs. 4 Crores Sanctioned from CSR Funds for Installing Rooftop Solar P.V. System on the Sansthan's Buildings

Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer of Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, informed that Rs. 4 crores have been sanctioned for the Rooftop Solar P.V. System Project on various buildings of the Sansthan by Maharashtra State Electricity Transmission Company from CSR funds.

Shri Sudhakar Yarlagaadda, Chairman of the ad-hoc Committee of the Sansthan and Principal District and Sessions Judge, Shri Siddharam Salimath, Member of the ad-hoc Committee of the Sansthan and District Collector and Shri Rahul Jadhav, the then Incharge Chief Executive Officer

of the Sansthan made efforts for this project at the government level.

Discussions about implementing the said project in the Sansthan as also the further action plan were held in the chamber of Shri Sanjeev G. Bhole, Chief Engineer of Mahatransco at Nasik on Wednesday, May 3, 2023. Shri Kishor Gawali, Incharge Deputy Executive Engineer (Electricity) of the Sansthan and Shri Atul Wagh, Incharge Chief of Mechanical department were present on the occasion as the Sansthan representatives.

After positive and significant discussions in the said meeting, Shri Sanjeev G. Bhole, Chief Engineer of Mahatransco instructed the concerned officers to take action about the Solar Rooftop on the various buildings of the Sansthan, as also to go to Shirdi in the next eight days to conduct a preliminary survey about the technical aspects. A proposal was submitted to the Maharashtra State Electricity Transmission Company for this project by the Sansthan. Former Chairman of the Shirdi Municipality, Shri Shivaji Gondkar and Shri Pradeep Peshkar co-operated in this work.

श्री साई बाबा ने अनुभव दिया है कि प्रेम तथा भक्ति पूर्वक अर्पित की हुई तुच्छ वस्तु भी वे सहर्ष स्वीकार कर लेते थे; परन्तु यदि वह अहंकार सहित भेंट की गई, तो वह अस्वीकृत कर दी जाती थी। पूर्ण सच्चिदानंद होने के कारण साई बाह्य आचार-विचारों को विशेष महत्त्व नहीं देते थे; बल्कि विनम्रता और आदर सहित भेंट की गई वस्तु का स्वागत करते थे। यथार्थ में देखा जाए, तो सद्गुरु साई बाबा से अधिक दयालु और हितैषी दूसरा इस संसार में कौन हो सकता है! उनकी तुलना समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाली चिन्तामणि या कामधेनु से भी नहीं हो सकती। जिस अमूल्य निधि की उपलब्धि हमें सद्गुरु से होती है, वह कल्पना से भी परे है। - श्री साई सत् चरित



Shri Radhakrishna Vikhe Patil, Revenue, Animal Husbandry and Dairy Development Minister of Maharashtra State availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*... Shri Sadashiv Lokhande, Member of Parliament from Shirdi, Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer of the Sansthan, Shri Rahul Jadhav, Deputy Chief Executive Officer and Shri Ajay Kulkarni, Architect of Shirdi City Beautification Plan Presentation were present on the occasion.



Shri Radhakrishna Vikhe Patil, Revenue, Animal Husbandry and Dairy Development Minister of Maharashtra State was felicitated by Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer on behalf of the Sansthan after availing the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*... Shri Sadashiv Lokhande, Member of Parliament from Shirdi and Shri Rahul Jadhav, Deputy Chief Executive Officer of the Sansthan were present on the occasion.

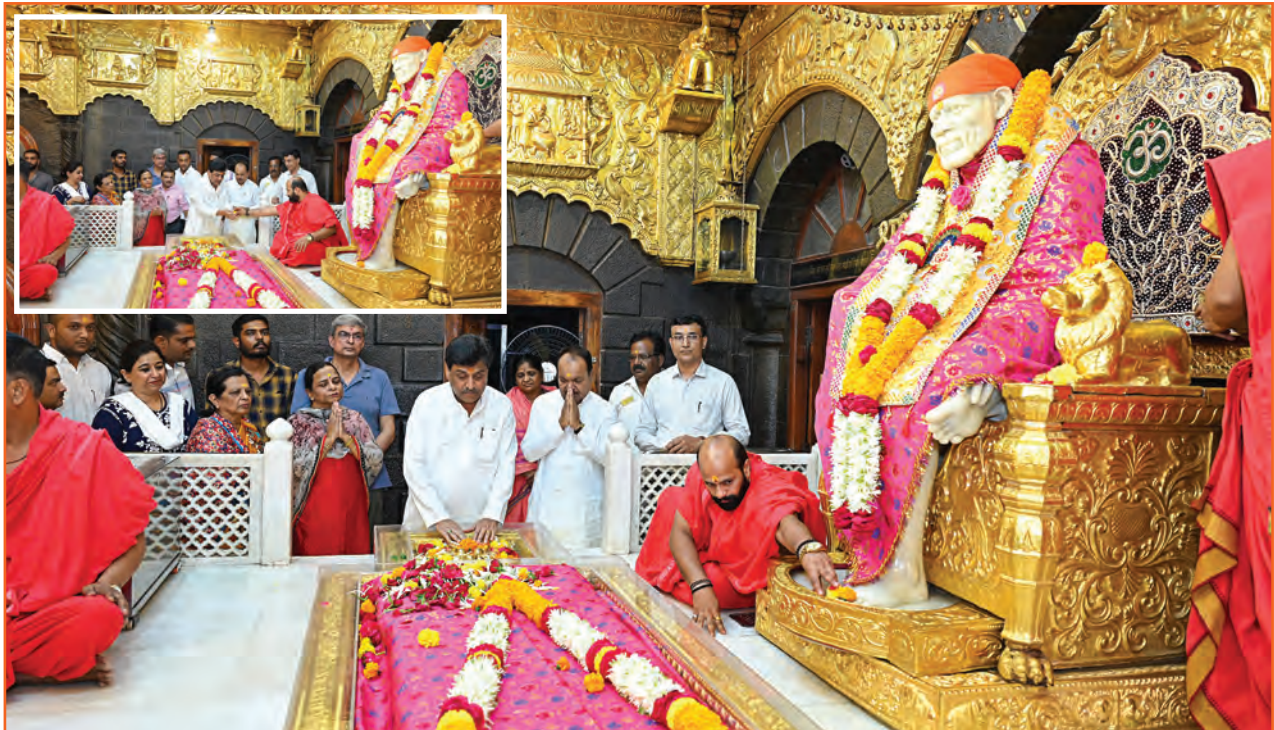


Shri Om Birla, Speaker of Lok Sabha, availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*... Shri Sujay Vikhe Patil, Member of Parliament, Shri Siddharam Salimath, Member of the ad-hoc committee of the Sansthan and District Collector, Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer of the Sansthan and Shri Rahul Jadhav, Deputy Chief Executive Officer were present on the occasion.





Shri Uddhav Thackeray, former Chief Minister, Maharashtra State along with his wife, were felicitated by Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer on behalf of the Sansthan after availing the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*... Shri Rahul Jadhav, Deputy Chief Executive Officer of the Sansthan was present on the occasion.



Shri Ashok Chavan, former Chief Minister, Maharashtra State, availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*... Shri Ramesh Choudhary, Incharge Chief of the Temple department was present on the occasion.



Shri Ashok Chavan, former Chief Minister, Maharashtra State, was felicitated on behalf of the Sansthan after availing the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*. Dr. Akash Kisave, Administrative Officer of the Sansthan and Shri Tushar Shelke, Incharge Public Relations Officer were present on the occasion.



Shri Ramdas Athavale, Union Minister, Social Welfare and Empowerment, Government of India along with his wife, availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*... Shri Sanjay Jori, the then Incharge Administrative Officer of the Sansthan was present on the occasion.



Shri Ramdas Athavale, Union Minister, Social Welfare and Empowerment, Government of India along with his wife, were felicitated on behalf of the Sansthan by Shri Sanjay Jori, the then Incharge Administrative Officer of the Sansthan on the occasion.



Shri Rahul Jadhav, the then Incharge Chief Executive Officer of the Sansthan

informed that Shri Ravi Narayan Kargal, farmer devotee of Shirur donated 2527 kgs. of Kesar mangoes costing Rs. 2,02,000/- to Shri Saiprasadalaya of Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi.

The said Sai devotee has been donating organically ripened mangoes to the Sansthan for four to five years. He had donated 5000 kgs. of Kesar mangoes worth Rs. 4,25,000/- last year. More than 1 lakh Sai devotees had availed the benefit of that.

The Kesar mangoes obtained as donation has been naturally ripened without any chemical process and are of high quality.

Shri Rahul Jadhav, the then Incharge Chief Executive Officer of the Sansthan, stating that on June 12, 2023 the pulp of these mangoes would be included in the Shri Saiprasadalaya meals for the Sansthan employees and *prasad*-meals for Sai devotees, appealed that everyone avail the benefit of this *prasad*-meals.



June 21 - International Yoga Day



Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer of the Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi remarked at the International Yoga Day programme organised by the Sansthan and Shirdi villagers, that *Yog Sadhana* is very important to remain disease-free in modern life.

International Yoga Day was celebrated

on June 21 in the garden in front of the Dwaravati Bhakt Niwas by the Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi and Shirdi villagers. Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer of the Sansthan, Shri Sanjay Jori, the then Incharge Administrative Officer, Shri Dinkar Desai, Incharge Deputy Executive Engineer, Principal, Headmaster, teachers, students



of the educational complex, Sansthan employees and Shirdi villagers were present in large numbers in this programme. Yogacharya Dr. Tushar Shisodiya, guiding everyone the *Yog Sadhana*, got them to

do *Yoga Asanas*. The Officers, employees along with the Chief Executive Officer of the Sansthan, Shirdi villagers and students did *Yoga Asanas* publicly on the occasion.



Ashadhi Ekadashi

Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi celebrated *Ashadhi Ekadashi* as a local festival. *Mahaprasad* of *Sabudana* (Sago) *Khichdi* was organised for this in Shri Sai Prasadalaya for the devout-devotees. Attractive floral decoration was done for this in Shri Sai Baba's *Samadhi Mandir*.

The 11th day of the *Shukla Paksha* (waxing phase of the lunar month of *Ashadh*) is recognised as *Ashadhi Ekadashi*. Considering the importance of this day, the Sansthan celebrates *Ashadhi Ekadashi* as a local festival. Various kinds

of programmes are organized for this. A programme of *kirtan* was held this year on the stage in front of the *Samadhi Mandir* from 8 p.m. to 9 p.m. on *Ashadhi Ekadashi*. Also, the *Palkhi* (Palanquin) of Shri Sai Baba was taken out in a procession through the Shirdi village at 9.15 p.m. The Chairman of the Sansthan, Members, Officers, Temple priests, employees, Shirdi villagers and Sai devotees had participated in large numbers.

The Sansthan had organized *Mahaprasad* of *Sabudana Khichdi* for *Ashadhi Ekadashi* in Shri Sai Prasadalaya.



Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer of the Sansthan, personally surveying Shri Sai Prasadalaya, communicated with the Sai devotees. About 65,000 devout-devotees availed the benefit of this *Khichdi* in Shri Sai Prasadalaya. About 66 sacks of *Sabudana*, 43 sacks of groundnuts, 845 kgs. *ghee* and 2140 kgs. potatoes were utilized for this.

Also, instead of preparing *prasad* of *sheera* for Sai Satyanarayan *Pooja* (worship), *shira-prasad* of *bhagri* was done. Attractive floral decoration was done in the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir* from the donation of donor Sai devotee, Shri Ravindra Bari of Jalgaon for *Ashadhi Ekadashi*.



Rs. 5 lakhs for *Annadan* and Rs. 18 lakhs for Medical Fund, a total of Rs. 23 lakhs were donated by the family of Shri C.H. Suryanarayan Moorthy, Sai devotee of Andhra Pradesh to the Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi. Shri C.H. Suryanarayan Moorthy was felicitated on the occasion by Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer on behalf of the Sansthan.



Guru Pournima Utsav - 2023

The annual *Shri Guru Pournima* festival was celebrated this year from Sunday, July 2, 2023 to Tuesday, July 4, 2023 by the Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi, in an auspicious and enthusiastic atmosphere.

The *Guru-disciple* tradition is very ancient. *Ashadhi Pournima* is celebrated as *Guru Pournima* to express gratitude towards our *Guru*. This *Guru Pournima* (full moon) is also recognised as *Vyas Pooja*. *Guru Pournima* has been celebrated in Shirdi since the incarnation-period of Shri Sai Baba. So, this day has an extraordinary significance for Sai devotees. Several devout-devotees who have faith in Shri Sai Baba, coming to Shirdi every year on *Guru Pournima* avail the *darshan* of the *Samadhi*, and *padayatris* (pilgrims on foot) with hundreds of *palkhis* (palanquins) from Maharashtra and other states attend the festival. This year's *Shri Guru Pournima*

festival was celebrated in an auspicious atmosphere in the presence of lakhs of devout-devotees. Shirdi resounded with the chanting of Sai's name by Sai devotees in about 29 palanquin processions from various parts of Gujarat and Maharashtra.

In order to facilitate the convenient accommodation and *darshan* of the devotees who came from the nook and corner of the country for the *Shri Guru Pournima* festival, monsoon pavilions were erected by the Sansthan in the temple area, as also in all accommodation locations. Additional buses were arranged to go to and from the temple and accommodation places and Shri Sai Prasadalya. First aid centers were started at *Dixit Wada* in front of the *Gurusthan*, the *darshan* line, New Bhakt Niwas Sthan (500 rooms), Sai Ashram, Shri Sai Prasadalya and Shri Sai Baba *Samadhi Mandir Shatabdi Mandap* beside the *Maruti Mandir*. Along





On the first day of the festival, Sunday, July 2, 2023

with this, after the *palkhis* reached Shirdi, the foot-pilgrims were accommodated at Sai Dharmashala at a nominal rate. *Ladoo* selling centers were set up, to make *ladoo-prasad* packets easily available to devotees during the festival period, at the entry gate No. 4, Shri Sai *Mangal* office, open theater in front of Dwarkamai, Sai Complex beside the Maruti temple, Shri Sai Prasadalya and all accomodation places.

On the first day of the festival, Sunday, July 2, 2023, at 5.15 a.m., Shri Sai Baba's

Kakad Aarati took place. After that, a grand procession of the Image of Shri Sai Baba, Shri Sai Satcharita *Pothi* (holy book) and the *Veena* was taken out from the Samadhi Mandir to Dwarkamai via *Gurusthan*, with the sounding of cymbal, *mridang* and other musical instruments. In this procession, Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer of the Sansthan carrying the *Veena*, Shri Siddharam Salimath, Member of the ad-hoc committee of the Sansthan and District Collector carrying the holy book and Dr.



On the first day of the festival, Sunday, July 2, 2023



Akash Kisave, Administrative Officer of the Sansthan and Shri Annasaheb Pardeshi, Security Officer carrying the Image of Shri Sai Baba participated. Shri Ramesh Chaudhary, Head of the Temple department of the Sansthan, temple priests, Shirdi villagers and Sai devotees were present in large numbers on the occasion. After the procession arrived at Dwarkamai, the non-stop reading of the holy book Shri Sai Satcharita commenced with Shri

Siddharam Salimath, Member of the ad-hoc committee of the Sansthan and District Collector reading the first chapter, Shri Vishnu Thorat, Incharge Superintendent, the second chapter, Sou. Pradnya Mahandule, Administrative Officer, the third chapter, Shri Chandrakant Dange, Incharge Superintendent, the fourth chapter and Shri Vitthal Barge, Incharge Superintendent, the fifth chapter.

At 7 a.m., Shri Siddharam Salimath,





Member of the ad-hoc committee of the Sansthan and District Collector performed

the *Padya Pooja* (Worship of the Holy Feet) of Shri Sai Baba in the *Samadhi Mandir*. Shri





Ramesh Choudhary, Head of the Temple department of the Sansthan, Shri Tushar Shelke, Incharge Public Relations Officer were present on this occasion.

At 12.30 p.m., Shri Sai Baba's Mid-day *Aarati* was done. From 4 p.m. to 6 p.m. H.B.P. Dr. Pradnya Deshpande-Palasodkar (Ambegaon Bu., Pune)'s *kirtan* programme was held on the north side stage of Shri Sai Baba Mandir. *Dhoop Aarati* of Shri Sai Baba was held at 7 p.m. From 7.30 p.m. to 10 p.m., Smt. Sunita Tikare (Mumbai)'s *Bhajan Sandhya* programme of devotional songs was held on the stage of Shri Sai Baba *Samadhi Shatabdi* (Centenary) *Mandap* beside the Hanuman temple. The artists of *Bhajan Sandhya* programme were felicitated on behalf of the Sansthan.

At 9.15 p.m. the procession of Shri Sai Baba's *Palkhi* was taken out through the village. Officers of the Sansthan, employees, villagers and Sai devotees in large numbers had participated on this occasion. After the return of the *Palkhi* procession, at 10 p.m.,

On the main day of the festival, Monday, July 3, 2023





Shri Sai Baba's *Shej Aarati* was performed. Dwarkamai was kept open for the *Akhand*





Parayan (continuous reading).

On the main day of the festival,

Monday, July 3, 2023, at 5.15 a.m. Shri Sai Baba's *Kakad Aarati* took place. After that





the non-stop reading of the holy book Shri Sai Satcharita concluded. After that, a grand procession of the sacred book Shri Sai Satcharita was taken out from Dwarkamai to the *Samadhi Mandir* via *Gurusthan* with the sounding of cymbal, *mridang* and other musical instruments. In this procession, Shri Sudhakar Yarlagadda, Chairman of the ad-hoc committee of the Sansthan and Principal District and Sessions Judge with the holy book, Shri Siddharam Salimath, Member of the ad-hoc committee of the Sansthan and District Collector with the *Veena* and Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer of the Sansthan and Lieut. Colonel Dr. Shailesh Oak, Medical Director with the Image of Shri Sai Baba participated. Dr. Akash Kisave and Sou. Pradnya Mahandule, Administrative Officers of the Sansthan, Shri Annasaheb Pardeshi, Security Officer, Shri Bhikan Dabhade, Executive Engineer, Shri Ramesh Choudhary, Head of the Temple department, Shri Tushar Shelke, Incharge Public Relations Officer, temple priests,

Shirdi villagers and Sai devotees were present in large numbers on this occasion.

At 6.20 a.m., the holy bath of Shri Sai Baba was done. On the occasion of Shri *Guru Pournima* festival at 7 a.m., the *Padya Pooja* of Shri Sai Baba in the *Samadhi Mandir* was performed by Shri Sudhakar Yarlagadda, Chairman of the Sansthan's ad-hoc committee and Principal District and Sessions Judge and his wife Sou. Malati Yarlagadda. At 8 a.m., Shri Sudhakar Yarlagadda, Chairman of the Sansthan's ad-hoc committee and Principal District and Sessions Judge, Shri Siddharam Salimath, Member of the ad-hoc committee of the Sansthan and District Collector and Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer of the Sansthan, having ritually worshipped the Flag of the Shri Sai Baba *Samadhi Shatabdi Stambh* (Flag Post), the Flag was changed. On this occasion, Shri Ramesh Chaudhary, Head of the Temple department, Shri Tushar Shelke, Incharge Public Relations Officer and the temple priests were present.

At 12.30 p.m. Mid-day *Aarati* of Shri Sai Baba was done. From 4 p.m. to 6 p.m. H.B.P. Dr. Pradnya Deshpande-Palsodkar's *kirtan* was performed. *Dhoop Aarati* of Shri Sai Baba was done at 7 p.m.

From 7.30 p.m. to 10 p.m., a programme of devotional songs by Smt. Vinita Bajaj, Durga Sai *Mandal* (Delhi) was held on the stage of the Shri Sai Baba *Samadhi Mandir Shatabdi Mandap*. The artists of this programme were felicitated on behalf of the Sansthan. A grand procession of Shri Sai Baba's Chariot was taken out through the village at 9.15 p.m. The Officers and employees of the Sansthan, Sai devotees, villagers and musical groups such as cymbal squad, *lezim* troupe, band squad, drum squad, participated in this procession in large numbers. From 10 p.m. to 5 a.m. the next day, there was a performance of artists on the stage in front of the *Samadhi Mandir*. Being the main day of the festival, the *Samadhi Mandir* of Shri Sai Baba was

kept open for the *darshan* throughout the night. Lakhs of devotees availed the benefit of this.

On the concluding day of the festival, Tuesday, July 4, 2023 at 6.50 a.m., Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer of the Sansthan and his wife Sou. Supriya performed the *Padya Pooja* in the *Samadhi Mandir*. After that the *Rudrabhishek Pooja* was performed at the *Gurusthan* at 7 a.m. After the *Kala kirtan* of H.B.P. Dr. Pradnya Deshpande-Palsodkar, that started at 10 a.m., the *Dahi-handi* (pot of curd) was broken. Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer of the Sansthan, Shri Rahul Jadhav, Deputy Chief Executive Officer, Dr. Akash Kisave and Sou. Pradnya Mahandule, Administrative Officers, Shri Annasaheb Pardeshi, Security Officer, Shri Ramesh Choudhary, Head of the Temple department, Shri Tushar Shelke, Incharge Public Relations Officer, temple priests, Shirdi villagers and Sai devotees were





Shri Deepak Kesarkar, Minister of School Education and Marathi Language, Government of Maharashtra, availed the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi*...

present in large numbers on the occasion. After that H.B.P. Dr. Pradnya Deshpande-Palsodkar was felicitated on behalf of the Sansthan by Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer.

At 12.10 p.m. Mid-day *Aarati* of Shri Sai Baba was done. *Dhoop Aarati* was done at 7 p.m.

From 7.30 p.m. to 9.30 p.m. Shri Sanjeev Kumar (Pune)'s *Bhajan Sandhya* (devotional songs) programme was held on the stage of Shri Sai Baba *Samadhi Shatabdi Mandap* beside the Hanuman temple. On this occasion, the artists of the programme were felicitated on behalf of the Sansthan. The audience spontaneously lauded the programme. The *Shej Aarati* of Shri Sai Baba was done at 10 p.m.

Like every year, with the exception of the corona period, the *padayatri* devout of Shri Sai Baba Palkhi Sohla Samiti who had

come from Pune, attended the festival. On the occasion of the festival, the attractive decoration of the temple and its surroundings from the donation by Shri Ajay Kumar Gupta, philanthropic Sai devotee from Moradabad, Uttar Pradesh and the spectacular electric lighting of the temple and its surroundings, Sai Baba Hospital and Shri Sai Prasadalya by Sairaj Decorators (Mumbai) drew the attention of Sai devotees. On behalf of the Sansthan, Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer felicitated these donor Sai devotees in the Sai auditorium. Shri Bhikan Dabhade, Executive Engineer of the Sansthan, Shri Kishor Gawli, Head of the Electrical department and employees were present on the occasion.

During the festival period, about 1,54,946 devout-devotees availed the benefit of the *prasad*-meal in Shri Sai Prasadalya, and free *bundi prasad* packets

were distributed to about 1,88,200 devout-devotees. Similarly, 2,05,450 *ladoo* packets of 1 *ladoo* each and 69,532 *ladoo* packets of 3 *ladoo*s each, as *prasad*, were sold.

Thousands of Sai devotees availed the benefit of accommodation arrangement in Shri Sai Ashram, Shri Sai Baba Bhakt Niwas Sthan, Dwaravati and Shri Sai Prasad Niwas Sthan.

On the occasion of the festival, the family of Shri Vamsi Krishna Vitla, Sai devotee from Andhra Pradesh, offered a gold crown weighing 355 grams 600 milligrams worth Rs. 19,46,199/- as donation at the Feet of Shri Sai Baba.

Administrative Officers, Dr. Akash

Kisave, Sou. Pradnya Mahandule and Shri Dilip Ugale, Dr. Shailesh Oak, Executive Engineer Shri Bhikan Dabhade, Security Officer Shri Annasaheb Pardeshi, Head of all departments and all employees under the guidance of Shri Sudhakar Yarlagadda, Chairman of the ad-hoc Committee of the Sansthan and Principal District and Sessions Judge, Shri Siddharam Salimath, Member of the ad-hoc Committee of the Sansthan and District Collector and Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer and Shri Rahul Jadhav, Deputy Chief Executive Officer took special efforts for the successful conduct of this festival.



Donations Received During The Festival

Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer of Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi informed at a press conference that the Sansthan received donations of Rs. 7,03,57,248/- at the *Shri Guru Pournima* festival organized during the period from Sunday, July 2, 2023 to Tuesday, July 4, 2023. Shri Rahul Jadhav, Deputy Chief Executive Officer, was present on the occasion.

Elaborating on this, Shri P. Siva Sankar said that the total donations received included, Rs. 2,85,46,882/- received in cash in the *dakshina* boxes, Rs. 1,15,84,150/- through donation counters, Rs. 2,84,946/- donations through Shri Sai Prasadalaya, paid pass donations through P.R.O. Rs. 67,33,800/-, Rs. 56,83,133/- through debit-credit cards, Rs. 64,05,078/- through online, Rs. 80,74,820/- through cheques-d.d.s, Rs. 2,09,005/- through money orders, 472.300 grams of gold amounting to Rs. 25,72,297/-

and silver 4.679 grams amounting to Rs. 2,63,137/-.

During the *Shri Guru Pournima* festival period generally, over 2 lakh Sai devotees avail the *darshan* of Shri Sai Baba. During the period of the festival around 1,54,946 Sai devotees availed the *Prasad*-meal in Shri Sai Prasadalaya, while free *Bundi-prasad* packets were distributed to 1,88,200 Sai devotees in the *darshan* line. During this period, received Rs. 37,85,800/- through the *ladoo packets* as *prasad*. During the festival, thousands of Sai devotees availed the benefit of accomodation in the Sansthan's Sai Prasad Niwas Sthan, Sai Baba Bhakt Niwas Sthan, Dwaravati Niwas Sthan, Sai Ashram Bhakt Niwas and Sai Dharmashala, as well as the sheds erected for additional accommodation. Also, *padyatri* Sai devotees accompanying the *palkhis* from various parts availed the benefit of accommodation at the Sai Dharmashala.





Commencement of Tree Plantation on 44 Acres Land by the Sansthan!

Preserving the message of *Mauje Rui* by the Shri Saibaba Sansthan
environmental protection of Shri Sai Baba,
the plantation of trees on 44 acres land at

(Contd. on page 34)



Tuesday, August 15, 2023 : Flag Hoisting by the Chief Executive Officer of the Sansthan, Shri P. Siva Sankar on Independence Day on behalf of the Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi...

(Contd. from page 33)

Trust, Shirdi, commenced on Saturday, July 15, 2023. The tree plantation campaign was started by the planting of a mango tree by Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer of the Sansthan. In this, the Sansthan's I.T.I. college students, teachers and staff of the Sansthan provided valuable help. Shri P. Siva Sankar stated that the tree plantation programme will be continued ceaselessly further too.

The Sansthan has barren lands at various places in Shirdi area. Tree plantation activities have been undertaken by the Sansthan on these barren lands. For this, the students and staff of the educational complex have vowed to plant and nurture at least 5 trees each. Along with planting of 2000 bamboo trees at the Shri Saibaba Sansthan Trust, Shirdi's *Mouje Rui* area for security, planting of 300 mango, tamarind, neem and other variety trees have commenced.

Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer of the Sansthan, Smt. Mangala Varade, Chief Accounts Officer, Shri B.D. Dabhade, Executive Engineer, Dr. Akash Kisave, Sou. Pradnya Mahandule and Shri Dilip Ugale, Administrative Officers, Shri Anil Bhanage, Head of Gardens department, employees and students were present on this occasion.





The President of India, Smt. Draupadi Murmu, after availing the *darshan* of Shri Sai Baba's *Samadhi* was felicitated on behalf of the Sansthan by Shri P. Siva Sankar, Chief Executive Officer... Shri Ramesh Bais, Governor of Maharashtra, Shri Radhakrishna Vikhe Patil, Guardian Minister, Shri Sadashiv Lokhande, Member of Parliament, Shri Sudhakar Yarlagadda, Chairman of the Sansthan's ad-hoc committee and Principal District and Sessions Judge, Shri Siddharam Salimath, Member of the Sansthan's ad-hoc committee and District Collector, were present on the occasion.



**The Same
Marvellous Vision,
Which One Has At The
Sight Of Vitthal And
Rakhumai At
Pandharpur,**

**Is Experienced In
Shirdi
By Baba's *Darshan*.**

Shri Sai Satcharita

श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी के लिए मुख्य कार्यकारी अधिकारी द्वारा मे. प्रिंट्रेड इश्युज (इं) प्रा. लि., १७, प्रगति इंडस्ट्रियल इस्टेट, ३१६, एन. एम. जोशी मार्ग, मुम्बई - ४०० ०११ में मुद्रित और साई निकेतन, ८०४ बी, डॉ. आम्बेडकर रोड, दादर, मुम्बई - ४०० ०१४ में प्रकाशित। * सम्पादक : मुख्य कार्यकारी अधिकारी, श्री साईबाबा संस्थान विश्वस्तव्यवस्था, शिर्डी